Sociological Perspective of Education

Unit-V

Public Private Partnership

सार्वजनिक निजी भागीदारी

Meaning of Public Private Partnership

सार्वजनिक निजी भागीदारी का अर्थ

A public–private partnership is a cooperative arrangement between two or more public and private sectors, typically of a long-term nature. In other words, it involves an arrangement between a unit of government and a business that brings better services or improves the country's capacity to operate effectively.

एक सार्वजनिक-निजी साझेदारी दो या दो से अधिक सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के बीच एक सहकारी व्यवस्था है, आमतौर पर दीर्घकालिक प्रकृति की। दूसरे शब्दों में, इसमें सरकार की एक इकाई और एक व्यवसाय के बीच एक व्यवस्था शामिल है जो बेहतर सेवाएं प्रदान करती है या प्रभावी रूप से संचालित करने के लिए देश की क्षमता में सुधार करती है।

Features of Public Private Partnership

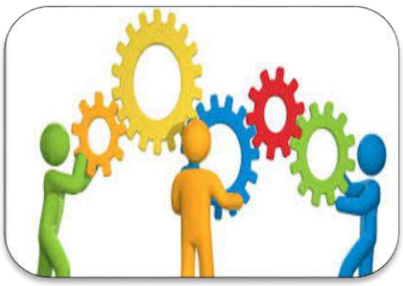

Innovations नवाचार

Resource Sharing
संसाधन साझाकरण

Service सेवा

Societal Needs
सामाजिक आवश्यकताएं

Cost Effective
प्रभावी लागत

Innovations-With the involvement of the private firms, the PPP approach also initiates the implications of creativity and new technology to the infrastructure projects.

Resource Sharing- The capital, financial, design and other resources required, are shared between the government and the firm for successful project accomplished.

Service-the partnership of private and public sector helps in provision of service to the society.

Societal Needs-The need of the society can be fulfilled by the coming together of public and private sector.

Cost Effective-The partnership of both the sectors can lessen the financial burden on both the sectors.

पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप की विशेषताएं

नवाचार-निजी फर्मों की भागीदारी के साथ, पीपीपी दृष्टिकोण रचनात्मकता और नई प्रौद्योगिकी के निहितार्थों को बुनियादी ढांचा प्रदान करता है।

संसाधन साझाकरण- पूंजी, वित्तीय, डिजाइन और आवश्यक अन्य संसाधन, सरकार और फर्म के बीच सफल प्रोजेक्ट के लिए साझा किए जाते हैं।

सेवा-निजी और सार्वजनिक क्षेत्र की साझेदारी समाज को सेवा प्रदान करने में मदद करती है।

सामाजिक आवश्यकताएं-सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के एक साथ आने से समाज की आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है।

प्रभावी लागत-दोनों क्षेत्रों की साझेदारी से दोनों क्षेत्रों पर वित्तीय बोझ कम हो सकता है।

Role of Private Public Partnership in Education

Education is one of the most essential elements for the development of the socioeconomic order of the country. In a democratic nation, the education empowers the marginalized poor enabling their participation in the development of the country. Education is broadly viewed as the intellectual and moral training of individuals through which their potentialities are developed .Education is the key of development of any nation. Education is the process through which a nation develops its self-consciousness by developing the self consciousness of the

individuals who compose it. Talented and skillful youth of a country can double the rate of its growth. Education is a social institution which provides mental, physical, ideological and moral training to the individuals of the society, so as to enable them to have full consciousness of their mission, purpose in life and equip them to achieve that purpose. Traditionally it has been the role of the government to provide education to young citizen, nevertheless the participation of private bodies have a significant contribution.

Increasing access to school:

India has a high dropout rate from primary to secondary school. As access at the elementary level has become nearly universal, the focus in the education system is now shifting towards increasing the quality of outcomes. PPPs can extend the reach of the government system to provide children access to schools.

Using underutilized school infrastructure:

By getting private operators to manage high quality schools, governments can effectively utilize existing infrastructure.

Improving the quality of education:

The government school system urgently needs improvement. Through PPPs, private operators can introduce innovative pedagogical and school management techniques to create models of excellence within the government system.

Accountability

The involvement of Private sector will increase the accountability of Educational operations of the public sector.

Competition

Involvement of both the sectors creates a healthy competition which makes them serve the educational needs in a better way.

Choice for parents

Private Public Partnership helps the parents in making choice regarding the the type of board they want to educate their child in.

Facilities

Private sectors can fulfill the requirement of the students which cannot be met by public sector.

शिक्षा में निजी सार्वजनिक भागीदारी की भूमिका

देश के सामाजिक आर्थिक व्यवस्था के विकास के लिए शिक्षा सबसे आवश्यक तत्वों में से एक है। एक लोकतांत्रिक राष्ट्र में, शिक्षा देश के विकास में उनकी भागीदारी को सक्षम बनाने वाले हाशिए के गरीबों को सशक्त बनाती है। शिक्षा को व्यक्तियों के बौद्धिक और नैतिक प्रशिक्षण के रूप में देखा जाता है, जिसके माध्यम से उनकी क्षमताओं का विकास होता है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की कुंजी है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक राष्ट्र अपनी रचना करने वाले व्यक्तियों की आत्म-चेतना विकसित करता है। किसी देश का प्रतिभाशाली और कुशल युवा इसके विकास की दर को दोगुना कर सकता है। शिक्षा एक सामाजिक संस्था है जो समाज के व्यक्तियों को मानसिक, शारीरिक, वैचारिक और नैतिक प्रशिक्षण प्रदान करती है, ताकि वे अपने मिशन की पूर्ण चेतना, जीवन में उद्देश्य और उस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बना सकें। परंपरागत रूप से युवा नागरिक को शिक्षा प्रदान करने के लिए सरकार की भूमिका रही है, फिर भी इसमें निजी निकायों की भागीदारी का महत्वपूर्ण योगदान है।

स्कूल तक पहुंच बढ़ाना

भारत में प्राथमिक से माध्यमिक विद्यालय तक ड्रॉप आउट की अधिक दर है। जैसा कि प्राथमिक स्तर पर पहुंच लगभग सार्वभौमिक हो गई है, शिक्षा प्रणाली में ध्यान अब परिणामों की गुणवत्ता बढ़ाने की ओर बढ़ रहा है। पीपीपी बच्चों को स्कूलों तक पहुंच प्रदान करने के लिए सरकारी प्रणाली की पहुंच का विस्तार कर सकता है।

स्कूल के बुनियादी ढांचे का उपयोग करना

उच्च गुणवत्ता वाले स्कूलों का प्रबंधन करने के लिए निजी ऑपरेटरों को प्राप्त करके, सरकारें मौजूदा बुनियादी ढांचे का प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकती हैं।

शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार

सरकारी स्कूल प्रणाली में तत्काल सुधार की आवश्यकता है। पीपीपी के माध्यम से, निजी ऑपरेटर सरकारी प्रणाली के भीतर उत्कृष्टता के मॉडल बनाने के लिए नवीन शैक्षणिक और स्कूल प्रबंधन तकनीकों को पेश कर सकते हैं।

जवाबदेही

निजी क्षेत्र की भागीदारी से सार्वजनिक क्षेत्र के शैक्षिक कार्यों की जवाबदेही बढ़ेगी।

प्रतियोगिता

दोनों क्षेत्रों के शामिल होने से एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा पैदा होती है जो उन्हें शैक्षिक आवश्यकताओं को बेहतर तरीके से पूरा करती है।

माता-पिता के लिए विकल्प

निजी सार्वजनिक भागीदारी माता-पिता को बोर्ड के चुनओ में विकल्प प्रदान करती है, जिसमें वे अपने बच्चे को शिक्षित करना चाहते हैं।

सुविधाएं

निजी क्षेत्र छात्रों की उन आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं जो सार्वजनिक क्षेत्र पूरा नहीं कर पाते ।

Demerits of Private Public Partnership

Increase in Cost

Private institutions provide education at higher cost which makes it difficult for the lower income group to afford.

Profit orientation

Private Sector is focused towards earning profit rather than providing service.They charge higher fees from the students to earn higher profit.

Exploitation of teachers

Private institutions pay less salary to the teachers in exchange of heavy workload.They hire the teachers at low wages thus saving a huge amount annually.

Lack of Job security

Private school teachers have no job security in most private schools even in the most prestigious ones. They can be easily fired or dismissed for frivolous reasons or no reason at all.

Lack of skills

Private schools usually prefer to induct untrained teachers to reduce cost of hiring and staffing. This practice of private school closes the doors of employment for experienced and trained teachers. Untrained teachers are easily manipulated and coerced into working on low wages.

Inhuman workloads

A very high percentage of teachers in private schools feel that they are over burdened. They work for longer hours and they have to work even after their duty hours to complete their tasks. There is enormously excessive amount of paper work for the teachers to perform and non teaching chores are routinely assigned to them by the administrators. Teachers have to comply with the instructions only to save their jobs.

निजी सार्वजनिक भागीदारी के नुकसान

लागत में वृद्धि

निजी संस्थान भारी लागत पर शिक्षा प्रदान करते हैं जो निम्न आय वर्ग के लिए जुटा पाना मुश्किल होता है।

लाभ अभिविन्यास

निजी क्षेत्र सेवा प्रदान करने के बजाय लाभ अर्जित करने की ओर केंद्रित है। वे उच्च लाभ अर्जित करने के लिए छात्रों से अधिक शुल्क लेते हैं।

शिक्षकों का शोषण

निजी संस्थान भारी कार्यभार के बदले में शिक्षकों को कम वेतन देते हैं। वे कम वेतन पर शिक्षकों को नियुक्त करते हैं, जिससे सालाना बड़ी रकम बचती है।

<u>नौकरी की सुरक्षा का अभाव</u>

निजी स्कूल के शिक्षकों को अधिकांश प्रतिष्ठित लोगों में भी अधिकांश निजी स्कूलों में नौकरी की सुरक्षा नहीं है। तुच्छ कारणों या बिना किसी कारण के उन्हें आसानी से निकाल दिया या खारिज किया जा सकता है।

<u>कौशल की कमी</u>

निजी स्कूल आमतौर पर अप्रशिक्षित शिक्षकों को काम पर रखने और स्टाफ की लागत को कम करना पसंद करते हैं। निजी स्कूल की यह प्रथा अनुभवी और प्रशिक्षित शिक्षकों के लिए रोजगार के दरवाजे बंद कर देती है। अप्रशिक्षित शिक्षकों को आसानी से कम वेतन पर काम करने के लिए मजबूर किया जाता है।

<u>अमानवीय कार्यभार</u>

निजी स्कूलों में प्रतिशत शिक्षकों को लगता है कि वे बोझ से दबे हुए हैं। वे लंबे समय तक काम करते हैं और उन्हें अपने कार्यों को पूरा करने के लिए ड्यूटी के घंटों के बाद भी काम करना पड़ता है। शिक्षकों के प्रदर्शन के लिए बहुत अधिक मात्रा में कागजी कार्य होते हैं और गैर-शिक्षण कार्य नियमित रूप से प्रशासकों द्वारा उन्हें सौंपे जाते हैं। शिक्षकों को अपनी नौकरी बचाने के लिए केवल निर्देशों का पालन करना होता है।

-Mrs. Aayesha Hendricks